आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711 पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 4 अंक : 1 बीकानेर, सितम्बर, 2016 मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति की कलम से.....

राजुवास की प्रगति रफ्तार को आगे ले जाना ही हमारा लक्ष्य है

70वें स्वाधीनता दिवस पर कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत द्वारा विश्वविद्यालय के दीवान-ए-आम में आयोजित समारोह में दिए गए सम्बोधन का सार यहां प्रस्तुत है:

प्रिय छात्र/छात्राओं, कर्मचारियों, शिक्षक–गण, परिवारजन और संभ्रान्त नागरिक बंधुओं! 70वें स्वाधीनता दिवस पर मेरी ओर से हार्दिक बधाई! आज से ''याद करो कुर्बानी'' अभियान शुरू हुआ है। स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान, त्याग और संघर्ष के बारे में युवा पीढ़ी को बताने के लिए विश्वविद्यालय स्तर पर भी ऐसा ही कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। आने वाले समय में विश्वविद्यालय परिसर में सबसे ऊँचा तिरंगा फहराया जाएगा और साथ ही स्वामी विवेकानंद की आदमकद प्रतिमा स्थापित की जाएगी जिससे हमें निरंतर प्रेरणा मिलती रहेगी। विश्वविद्यालय की स्थापना 2010 में हुई। हमने संकल्प के साथ तेज गति से आगे कदम बढ़ाए हैं और हमारे लिए गर्व की बात है कि देश–प्रदेश में ''राजुवास'' एक ब्रान्ड नाम बन सका। हमने चुनौतियों को अवसर के रूप में बदला और तेज गति से प्रगति करने के कारण देश के शीर्षस्थ विश्वविद्यालयों में शामिल हो सके। वेटरनरी विश्वविद्यालय की क्षमता और जरूरतों को राज्य प्रशासन ने महसूस किया परिणामतः इस वर्ष 150 करोड़ रू. का बजट पारित किया गया है। अपनी स्थापना के 7वें वर्ष में 10 गुना बजट में बढ़ोतरी का होना हमारी उपलब्धियों को प्रदर्शित करता है। विश्वविद्यालय नवाचारों में भी आगे है। उत्तर पुस्तिकाओं की ऑन–लाइन जांच प्रक्रिया शुरू करना और राज्य सरकार द्वारा कामधेनू पीठ की स्थापना का निर्णय इस ओर हमारी उपलब्धि है। देशी गौवंश का संवर्द्धन और विकास का कार्य हमारी प्राथमिकताओं में शामिल है। इसके वीर्य और भ्रूण से संबंधित तकनीकों का उपयोग कर पशुपालकों तक स्वदेशी गौवंश का प्रसार किया जाएगा। इस वर्ष 25 हजार लोगों को पशुपालन संबंधी कौशल विकास प्रशिक्षण देने का लक्ष्य है। कौशल विकास उद्यमिता केन्द्र की स्थापना करना भी हमारा लक्ष्य है। विश्वविद्यालय आपकी प्रतिबद्धता और सहयोग से प्रगति की रफ्तार को आगे ले जाएगा, ऐसी मेरी कामना है। जयहिन्द।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री राजकुमार रिणवां लाछड़सर (रतनगढ़) गांव में आयोजित कृषक पशुपालन गोष्ठी में ''पशुपालन नये आयाम'' के अंक का विमोचन करते हुए

कृषकों–पशुपालकों के लिए एक सुनहरा अवसर

ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट 2016 जयपुर में 9–11 नवम्बर को

राजस्थान सरकार द्वारा राज्य में कृषि आय में वृद्धि करने के लिए कृषि एवं संबंधित परितंत्र के विकास के लिए प्लेटफॉर्म के रूप में एक कृषि तकनीकी एवं व्यापार समारोह "ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट 2016" का आयोजन जयपुर शहर में आगामी 9 से 11 नवम्बर 2016 को किया जाएगा। इसमें कृषि इनपुट एवं सुरक्षित कृषि, सिंचाई, प्लास्टिकल्चर एवं प्रीसीजन फार्मिंग, फॉर्म मशीनरी एवं सेवाएं, कार्बनिक कृषि, बागवानी, पशुधन, मूल्य–वर्धित उत्पाद प्रदर्शनी में शामिल किये जायेंगे। ग्राम 2016 के माध्यम से किसानों का सशक्तिकरण, कृषि में महिलाओं की सहभागिता, कृषि नवाचारों का प्रदर्शन, अंतर्राष्ट्रीय निवेश, व्यवसाय के अवसर और कृषि आधारित अनुसंधान के तकनीकी हस्तांतरण को प्रोत्साहन दिया जाना है। समारोह में किसान गोष्ठियां, पैनल परिचर्चा, आडियो–वीजुएल डिसप्ले, कृषि उद्यमियों के लिए स्टार्ट–अप कैंप, लाइव प्रदर्शन, क्षमता निर्माण कार्यक्रम और पुरस्कार आदि के कार्यक्रम भी आयोजित किये जायेंगे। इस समारोह में किसानों और पशुपालकों के समूह, प्रगतिशील किसान, केन्द्र और राज्य सरकार के शीर्ष स्तरीय अधिकारी, शिक्षाविद्, अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान संस्थानों के वरिष्ठ विशेषज्ञ, वित्तीय संस्थान, विकास एजेन्सियां, आधारभूत संरचना निर्माता गण भाग लेंगे। अंतर्राष्ट्रीय कृषि सर्वोत्तम कार्य पद्धतियों को साझा करना, कृषि में होने वाले परिवर्तनों पर वैश्विक दृष्टिकोण, किसानों को उपभोक्ताओं से जोड़ने, सार्वजनिक–निजी भागीदारी के लिए एक कार्यात्मक प्रारूप तैयार करने जैसे विषयों पर भी चर्चा की जाएगी। प्रगतिशील कृषक और पशुपालकों को इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए। एग्रीटेक मीट से उन्हें व्यवसाय में कुछ नया करने की प्रेरणा मिलेगी और वे नए जमाने के साथ कदम दर कदम आगे बढ़ेंगे।

मुख्य समाचार

देशी गौवंश और वृक्षारोपण से गांवों में खुशहाली आएगी : माननीय वन राज्यमंत्री श्री राजकुमार रिणवां

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय के तहत वेटरनरी यूनिवर्सिटी प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 7 अगस्त को लाछड़सर (रतनगढ़) गांव में कृषक–पशुपालक गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में 432 कृषक–पशुपालकों ने उन्नत पशुपालन और पशुचिकित्सा तकनीकों की वैज्ञानिक जानकारी विशेषज्ञों द्वारा प्राप्त की। खनिज, वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री राजकुमार रिणवां ने दीप प्रज्वलित कर गोष्ठी का शुभारंभ किया। इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए राज्यमंत्री श्री रिणवां ने कहा कि हमारी संस्कृति में पशुओं के विभिन्न अवतार रूप में पूजा की जाती है। पशु हमारे मित्र हैं जो मुश्किल समय व जलवायु परिस्थितियों में हमारे जीवन का सम्बल बने हैं। देशी नस्ल के गौधन में अच्छे उत्पादन और अनुकूलन की क्षमता है। ब्राजील और अन्य देशों में भी स्थानीय नस्लों का महत्व बढ़ा है। वेटरनरी विश्वविद्यालय ने देशी गौवंश के संवर्द्धन और विकास के उल्लेखनीय कार्य किए हैं। वन राज्यमंत्री श्री रिणवां ने कहा कि रतनगढ़ में वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र बनने से क्षेत्र के पशुपालकों और कृषकों को नई पशुपालन तकनीक सीखने का अवसर मिलेगा। इसके लिए भूमि चिन्हित की गई है। समारोह के अध्यक्ष कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि नए पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र शुरू होने से क्षेत्र के कृषकों और पशुपालकों को पशुपालन की नवीन तकनीक और उन्नत पशु पालन में पारंगत करके पशुओं को अधिक उत्पादक और उपयोगी बनाया जा सकेगा। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर. के. धूड़िया ने विश्वविद्यालय द्वारा चलाए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी दी। वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र चूरू के प्रभारी डॉ. राजेश सिंघाठिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया। एक दिवसीय गोष्ठी में पशुपालन विभाग, चूरू के संयुक्त निदेशक डॉ. राजेन्द्र तमोली ने राज्य के पशुपालन विभाग की कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। वेटरनरी विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ वैज्ञानिकों में डॉ. दिनेश जैन ने उन्नत पशुपोषण, डॉ. प्रमोद धतरवाल ने प्रजनन रोगों, डॉ. सुनील तमोली ने पशु रोगों और दिनेश आचार्य ने चारा फसलों की खेती के विषयों पर अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए। मुख्य अतिथि ने प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित ''पशुपालन नए आयाम'' के मासिक ताजा अंक का विमोचन किया। अतिथियों ने श्री कृष्ण गौशाला अध्यक्ष श्री दीपाराम पारीक, अर्जुनसिंह, कुन्दनसिंह, भैराराम व गोपाल मारू को विश्वविद्यालय द्वारा अपर्णा भेंट कर सम्मानित किया गया। गोष्ठी में रतनगढ के वरिष्ठ पशुचिकित्सा अधिकारी डॉ. हीरालाल सोनी, जिला पशु चिकित्सा चल इकाई के प्रभारी डॉ. पवन सहारण और कालूराम ने भी अपनी सेवाएं दी। डॉ. चेतन चौहान, मनीराम, सोहनदास आदि ने गोष्ठी को सफल बनाने में सहयोग दिया।

कृषि प्रमुख शासन सचिव दरबारी द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय का भ्रमण

राज्य की कृषि एवं बागवानी प्रमुख शासन सचिव नीलकमल दरबारी ने 19 अगस्त को वेटरनरी विश्वविद्यालय का भ्रमण कर सजीव पशु म्यूजियम, पोल्ट्री, चारा उत्पादन की विभिन्न तकनीकों और पशु उपचार सेवाओं का अवलोकन किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने प्रमुख शासन सचिव को एमू पालन, मुर्गी और बतख की प्रमुख प्रजातियों तथा संकर मुर्गी "राजुवास स्ट्रेन" की उत्पादन क्षमता और उपयोगिता के बारे में विस्तृत जानकारी दी। प्रमुख शासन सचिव दरबारी ने विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र में हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से तैयार सेवण और मक्का घास उत्पादन कार्यों की भी जानकारी ली। उन्होंने अजोला हरा चारा उत्पादन कार्य को उपयोगी बताते हुए सेवण की पौध तैयार करने के राजुवास के प्रयासों की सराहना की। प्रमुख शासन सचिव ने राजुवास के सर्जरी और रेडियोलॉजी तथा मेडिसिन विभाग में पशुओं के उपचार की अत्याधुनिक चिकित्सा सेवाओं को उच्च कोटि का बताते हुए सराहा। उन्होंने पशुओं की क्रिटिकल केयर यूनिट, ब्लड बैंक, बड़े पशुओं के ऑपरेशन थिएटर सहित पहली पशुओं के लिए स्थापित देश की सी.टी. स्केन मशीन का अवलोकन किया। प्रमुख शासन सचिव ने कुलपति प्रो. गहलोत से पशुचिकित्सा शिक्षा की वर्तमान स्थिति और वेटरनरी विश्वविद्यालय में कृषकों तथा पशुपालकों के कल्याण के लिए चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी ली। इस अवसर पर कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक आनन्द स्वरूप छींपा, उप निदेशक बी.आर. कड़वा, जगदीश पूनिया व डॉ. उदयभान उपस्थित थे।

कृषि निदेशक अम्बरीश कुमार द्वारा आर.के.वी.वाई. योजनाओं का जायजा

कृषि विभाग के निदेशक और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के स्टेट नॉडल ऑफिसर श्री अम्बरीश कुमार ने 6 अगस्त को वेटरनरी विश्वविद्यालय की इकाईयों में चारा उत्पादन, पशु आहार और पशुपालन तकनीकों का निरीक्षण कर विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से सेवण घास उत्पादन कार्य का अवलोकन कर इसकी विस्तृत रिर्पोट भिजवाने को कहा। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय कृषि विकास योजनाओं के तहत चलने वाली 17 परियोजनाओं की प्रगति से अवगत करवाया। कृषि निदेशक ने पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र तथा पशुपोषण विभाग में पशु आहार और चारे की गुणवत्ता जांच बाबत स्थापित प्रयोगशालाओं के कार्यों की जानकारी ली। उन्होंने जैव तकनीकी विभाग और एपेक्स सेन्टर में किए जा रहे प्रायोगिक कार्यों का भी अवलोकन किया। उन्होंने मेडिसन विभाग में क्रिटिकल केयर यूनिट, पशुओं की ब्लड बैंक को भी देखा। कुलपति प्रो. गहलोत ने विश्वविद्यालय के पॉल्ट्री फॉर्म में जैव विविधता सजीव म्यूजियम के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि पशुचिकित्सा वैज्ञानिकों ने राजुवास स्ट्रेन तैयार करने में सफलता अर्जित की है। मुर्गी की देशी कड़कनाथ और ब्लैक एस्ट्रोलॉप आर.आई.आर. क्रॉस के अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं। निदेशक ने कुलपति से विश्वविद्यालय के शैक्षणिक और अनुसंधान कार्यों की भी विस्तृत जानकारी ली।

पशु पोषण पर पशुपालक प्रशिक्षण सम्पन्न

उन्नत पशु पोषण और हरा चारा उत्पादन पर बीकानेर व डूंगरगढ़ पंचायत समिति के 30–30 पशुपालकों के लिए प्रशिक्षण 8–9 अगस्त व 16–17 अगस्त, 2016 को राजुवास के पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र में उपनिदेशक कृषि व परियोजना निदेशक आत्मा, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किये गये। समापन समारोह में वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. जी.एस. मनोहर व प्रो. राकेश राव ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये। प्रसार शिक्षा निदेशक और प्रशिक्षण समन्वयक प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि पशुधन नस्ल सुधार, पोषण, प्रबंधन और पशु स्वास्थ्य जैसे विषयों पर वैज्ञानिक–विशेषज्ञों द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षित किया गया है। प्रशिक्षण के बाद पशुपालकों की प्रश्नोत्तरी में विजेता प्रशिक्षार्णियों को अतिथियों ने पुरस्कार प्रदान किए। प्रशिक्षण में प्रो. आर.के. धूड़िया, प्रो. राधेश्याम आर्य, डॉ. दिनेश जैन, डॉ. राजेश नेहरा, डॉ. तारा बोथरा, दिनेश आचार्य और महेन्द्र सिंह ने पशुपोषण और हरे चारे उत्पादन के विभिन्न पक्षों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए।

डाईयां गांव में 41 पशुपालकों का प्रशिक्षण सम्पन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु विविधिकरण सजीव मॉडल परियोजना के तहत 23 अगस्त को डाईयां गांव में "वर्तमान परिपेक्ष में भैंस पालन एक लाभकारी व्यवसाय" विषय पर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गांव के विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण भी किया गया। स्मार्ट ग्राम परियोजना के नॉडल अधिकारी डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सभी ग्रामवासियों की सक्रिय भागीदारी से पशु उत्पादन को बढ़ाने में मदद मिलेगी। शिविर में 36 पुरूष और 5 महिला कृषक/पशुपालकों ने भाग लिया। शिविर में डॉ अजय सिंह, डॉ पंकज मिश्रा और डॉ प्रमोद सिंह ने पशुपालकों को भैंस पालन के वैज्ञानिक प्रबन्धन, संतुलित आहार, विभिन्न रोगों की रोकथाम व उपचार के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 17, 20 एवं 27 अगस्त को गांव, दैपालसर, सुलखनिया एवं भरपालसर में एक दिवसीय कृषक–पशुपालक गोष्ठी एवं प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 108 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा 73 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 13, 18 एवं 24 अगस्त को गांव सिलोईया, माडवाड़ा, अणगौर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 73 पशुपालकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाडनूं द्वारा 4, 6, 9 एवं 24 अगस्त को गांव मंडाबासनी, गुदरास, दुजार एवं सिनवा तथा दिनांक 30 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 126 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा 143 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 12, 22, 23 एव 27 अगस्त को गांव घातदोबारा, माडेला निचली, मरगिया महुड़ा एवं पारड़ा गोकलिया में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 127 महिला पशुपालकों सहित कुल 143 पशुपालकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा पांच प्रशिक्षण शिविर आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 4, 12, 16, 23 एवं 26 अगस्त को गांव बिलावटी, सिकरोरी, ताखा, नगला मेथना तथा अऊ में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 132 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, अजमेर द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 29 अगस्त को नापाखेड़ा गांव में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 26 पशुपालकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में 106 पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा दिनांक 5, 11 एवं 26 अगस्त, 2016 को पीपला, पालड़ा एवं कचोलिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 106 पशुपालकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ केन्द्र द्वारा 211 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा 2, 5, 12, 15, एवं 16 अगस्त को केन्द्र परिसर में तथा गांव नईबारिंका, संगीता एवं मालेर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 29–30 अगस्त को दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर केन्द्र परिसर में आयोजित किया गया। इन शिविरों में 211 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 8, 10, 12, 17, 19, 22, 24, 30 एवं 31 अगस्त को गांव दरा, डायरा, पालाहेड़ा, दिलीपुरा, कुंदनपुरा, टाकरवाड़ा, भोपालगंज, भीमपुरा व कांगनिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 321 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 22, 23, 26, 30 एवं 31 अगस्त को पुठोली, अजोलिया का खेड़ा, सुवानिया, लालास, खेरखंदा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 53 महिला पशुपालकों सहित कुल 200 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी धौलपुर द्वारा प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6, 9, 16 एवं 26 अगस्त को मरेना, देहोली, लालपुर एवं तसीमो गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविर में 202 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र,लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा दिनांक 27 अगस्त को गांव ढाणी भोपालाराम में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 40 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा गोष्ठी एवं प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 4, 9, 12, 16, 19 एवं 26 अगस्त को गांव रामसरा, भगवान, अमरपुरा, रामगढ़, परलिका एवं डूगंरबास में एक दिवसीय कृषक एवं पशुपालन प्रशिक्षण शिविर/गोष्ठी तथा 22–24 अगस्त को कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर परिसर में तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 205 कृषक एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

वेटरनरी विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशालय के तहत स्थापित पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नोहर में देशी गौवंश की राठी नस्लों के संवर्द्धन और संरक्षण का कार्य विशेषज्ञों की देखरेख में किया जा रहा है। फरवरी 1985 तक यह फॉर्म राज्य सरकार के नियंत्रण में था। इसके बाद यह फॉर्म राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय को हस्तांतरित हो गया और उसके बाद राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही यह इसके नियंत्रण में आ गया। वर्ष 2009–10 से यह राष्ट्रीय कृषि विकास योजना में शामिल हो गया। वर्तमान में इस केन्द्र पर राठी नस्ल की 302 गौधन का वैज्ञानिक लालन–पालन कर इनकी क्षमता संवर्द्धन और विकास अनुसंधान कार्य किया जा रहा है। इसमें 83 गायें, 121 बछड़ियां, 94 बछड़े और 4 सांड शामिल हैं। इसके लिए एक प्रभारी अधिकारी, एक–एक सह प्राध्यापक और सहायक प्राध्यापक, दो सह शिक्षण करने वाले, एक तकनीकी सहायक एक सहायक कृषि अधिकारी सहित 17 मंत्रालयिक कार्मिक यहां नियुक्त हैं। राठी गाय का उद्‌गम साहीवाल, लाल सिंधि एवं थारपारकर के संकरण से हुआ। यह मध्यम आकार की दुग्ध देने वाली गाय है तथा इस विख्यात गौवंश को राठी के नाम से जाना पहचाना जाता है। वैज्ञानिक–विशेषज्ञों की सेवाओं और वैज्ञानिक रख–रखाव के कारण इस केन्द्र ने उल्लेखनीय उपलब्धियां अर्जित कर गाय से 25 लीटर तक दूध प्रतिदिन तक प्राप्त किया है। इसके अलावा उन्नत पशु पोषण और चिकित्सकीय देखभाल से राठी नस्लों में प्रथम ब्यांत की उम्र घटकर तीन से साढ़े तीन वर्ष तक हो गई है जब कि पूर्व में यह 5 से 6 साल तक रही है। अनुसंधान निदेशक प्रो. राकेश राव के अनुसार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के मुताबिक राठी नस्ल का एक ब्यांत में औसत दुग्ध उत्पादन 1700 लीटर था, केन्द्र में इसे औसत 2388 लीटर तक लाने में सफलता अर्जित की है। इस केन्द्र में अनुसंधान आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2010–11 में प्रति ब्यांत दुग्ध उत्पादन 2023 लीटर था जो वर्ष 2015–16 में 2388 लीटर पर आ गया है। इसी प्रकार दो ब्यांत के बीच अंतराल को भी 372 दिन तक लाया गया है। गौवंश की राठी और अन्य देशी नस्लों में वातावरण के प्रति अनुकूलन के साथ ही कम खर्च में भी अधिक उत्पादन देने की क्षमता विद्यमान है।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–सितम्बर, 2016

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	बांसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनूं, धौलपुर, सवाई–माधोपुर, अलवर, बून्दी, हनुमानगढ़, चूरू, कोटा, अजमेर, बीकानेर
तीन दिन का बुखार	गौवंश, भैंस	जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जयपुर, चित्तौड़गढ़, अलवर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़, ऊँट	जयपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सवाई–माधोपुर, बीकानेर
चेचक (माता रोग)	बकरी, भेड़, ऊँट	जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, हनुमानगढ़, चित्तौड़गढ़
गलघोंटू	भैंस, गौवंश	हनुमानगढ़, धौलपुर, जयपुर, सवाई–माधोपुर, दौसा, टौंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, चित्तौड़गढ़, अलवर, झुंझुनूं, अजमेर
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	सीकर, सिरोही, पाली, जालोर, हनुमानगढ़, जयपुर, कोटा, बीकानेर, श्रीगंगानगर, डूंगरपुर, उदयपुर
ठप्पा रोग	गौवंश, भैंस	हनुमानगढ़, जयपुर, बीकानेर, भीलवाड़ा, पाली, राजसमन्द, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा
फड़किया	बकरी, भेड़	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, कोटा, सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, भीलवाड़ा, बारां, बूंदी
थाइलेरिओसिस एवं बबेसियोसिस	भैंस, गौवंश	बाँसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, चूरू, सवाई–माधोपुर, श्रीगंगानगर, जयपुर, जोधपुर, सीकर
सर्रा (तिबरसा)	ऊँट, भैंस	बांसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, सीकर, श्रीगंगानगर, जयपुर
अन्तः परजीवी (गोल एवं पर्ण कृमि)	भैंस, गौवंश, भेड़, बकरी, ऊँट	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बाँसवाड़ा, सवाई–माधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, सीकर, श्रीगंगानगर, भीलवाड़ा, प्रतापगढ़

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. जी.एस. मनोहर, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान, एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

पशुओं में सीसा धातु की विषाक्तता और उसका उपचार

पशुओं में सीसा या लैड धातु की विषाक्तता एक आम परन्तु अत्यधिक महत्वपूर्ण समस्या है। पशुओं में धातुओं से होने वाली विषाक्तताओं में लैड धातु की विषक्तता सबसे अधिक होती है।

लैड धातु की विषाक्तता के मुख्य कारण

- दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुओं में जैसे बैटरी, इंजन का तेल आदि में लैड धातु का उपयोग किया जाता है। घरों में किये जाने वाले रंग में भी लैड धातु पाई जाती है। जब पशु इन बैटरी या रंग के खाली डिब्बे, ताजी पुती हुई दीवारों को चाट लेता है तो उससे लैड की विषाक्तता हो जाती है।
- मोटर वाहनों से निकले धुएँ में भी लैड की मात्रा पाई जाती है जो आसपास उगने वाले पेड पौधों पर जमा हो जाती है और पशु जब इन को खाता है तो विषाक्तता का शिकार हो जाता है।
- इसके अलावा फैक्ट्रियों से विसर्जित पदार्थो में भी लैड की अत्यधिक मात्रा पाई जाती है। ये विसर्जित पदार्थ जल स्त्रोतों में बहा दिए जाते हैं और ऐसा प्रदूषित पानी पशु पी लेता है तो विषाक्तता हो जाती है।
- इसके अलावा सीसा युक्त कीटनाशक दवाओं का छिड़काव फल और सब्जियों पर किया जाता है। इन कीटनाशकों के छिड़काव के तुरन्त बाद यदि पशु इन को खा ले तो उनमें इस धातु की विषाक्तता हो जाती है।

बछडे, वयस्क पशुओं की तुलना में सीसा की विषाक्तता के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। इसके अलावा कुपोषित और गर्भस्थ पशु भी सामान्य पशुओं की तुलना में सीसा विषाक्तता के प्रति अत्यधिक संवेदशील होते हैं। यदि पशु सीसा का सेवन अधिक मात्रा में एक या दो दिन में कर लेता है तो उसकी मौत भी हो जाती है। बकरियों, सुअरों और मुर्गियों में लैड धातु की विषाक्तता के प्रति ज्यादा प्रतिरोधक क्षमता होती है।

सीसा धातु की विषाक्तता के मुख्य लक्षण – मवेशियों में सीसा धातु की विषाक्तता मात्रा के ग्रहण करने के दो तीन दिन बाद दिखने वाले मुख्य लक्षण अंधापन, उत्तेजना, लड़खड़ाना, पलकों को बार बार झपकाना, दांतों का किटकिटाना, बीच में आने वाली वस्तुओं से टकराना, मांस पेशिओं में एंठन इत्यादि हैं। इसके अलावा पशु उद्दीपनों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हो जाता है। सीसा का लम्बे समय तक सेवन करने पर पशुओं में मुख्य लक्षण कमजोरी, भोजन ग्रहण नहीं करना, खून की कमी, कब्ज इत्यादि है। घोडों में लैड की विषाक्तता के मुख्य लक्षण भार में कमी आना, कमजोरी, उदासीनता, पेट दर्द, दस्त, जोर से हिनहिनाना इत्यादि हैं।

उपचार – पशुओं में सीसा धातु की विषाक्तता का सटीक उपचार उपलब्ध है। सीसा की विषाक्तता में डाई सोडियम कैल्शियम ई.डी.टी.ए. दिया जाता है इसका 1–2 : घोल 5 : शर्करा में बनाकर 110 मि.ग्रा. प्रति किलोग्राम शारीरिक वजन के हिसाब से दिन में दो बार दो दिन तक इंजेक्शन देना चाहिए फिर दो दिन छोड़कर इसी उपचार को अगले दो दिन तक पीडित पशु को देना चाहिए। इसके अलावा थायमिन भी 2–4 मि.ग्रा प्रति किलोग्राम प्रति दिन के हिसाब से दे सकते हैं, डाई सोडियम कैल्शियम ई.डी.टी.ए. और थायमिन को एक साथ लगाने पर पशु में जल्द फायदा होता है।

पशुपालकों को सलाह

- बैटरी, इंजन का तेलीय रंग के डिब्बों इत्यादि को खुले में नहीं छोड़ना चाहिए। उन्हें पशुओं के रहने और चरने के स्थान से दूर रखना चाहिए।
- पशुओं को साफ पानी पिलाना चाहिए। फैक्ट्रियों से प्रदूषित पानी के स्त्रोतों से उनको दूर रखना चाहिए।
- कीटनाशकों से ताजी छिडकाव की गयी फसलों से पशुओं को दूर रखना चाहिए।

पशुओं में सीसा धातु की विषाक्तता के लक्षण दिखते ही तुरन्त पशु चिकित्सक को दिखाना चाहिए।

–डॉ लक्ष्मी नारायण सांखला,
(मो. 9460067057) वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशुओं में बबेसिया रोग की पहचान एवं प्रबंधन कैसे करें

बबेसिया रोग किसी भी पशु प्रजाति को प्रभावित कर सकता है लेकिन संकर नस्ल के सभी उम्र के बछड़े, बछड़ियों व गायों को यह रोग मुख्य रूप से प्रभावित करता है। भैंसों को भी यह रोग काफी प्रभावित करता है। यह रोग छोटे पशुओं में ज्यादा घातक होता है जिसमें दो से चार दिनों में पशु की मृत्यु हो जाती है। यह रोग एक रक्त परजीवी से होता है जो बीमार पशु से स्वस्थ पशु में चींचड द्वारा फैलता है। चूंकि गर्मी तथा बरसात के मौसम में चींचड ज्यादा क्रियाशील होते हैं अतः इस मौसम में पशुओं में यह रोग ज्यादा देखने को मिलता है। इस रोग के लक्षणों में शुरू में तेज बुखार, भूख की कमी, लाल पेशाब आना, श्वसन तथा हृदय दर का बढ़ना तथा बाद में खून की कमी व पीलिया मुख्य है। धीरे–धीरे पशु में कमजोरी तथा अंत में 8–10 दिनों में मृत्यु हो जाती है।

प्रबंधन

- इस रोग की पहचान रोगी पशु के लक्षण, मौसम तथा बाड़े में चींचड़ों की उपस्थिति के आधार पर करें।
- प्रयोगशाला में खून की जांच द्वारा इस रोग की उपस्थिति का पता आसानी से लगाया जा सकता है। अतः पशु चिकित्सक से संपर्क कर खून की जांच करावें।
- चींचड़ों की संख्या को नियंत्रित करना भी इस बीमारी को रोकने का एक महत्वपूर्ण कदम है।

इस रोग के उपचार के लिए बाजार में कारगर दवा उपलब्ध है। अतः पशु के बीमार होने पर निकटतम पशुचिकित्सक से तुरंत सम्पर्क करें तथा उचित मार्गदर्शन में अपने पशुओं का इलाज करायें।

- प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

अपने स्वदेशी बकरी वंश को पहचानें
मारवाड़ी बकरी : गौरव प्रदेश का

मारवाड़ी नस्ल की बकरी मुख्यतया राजस्थान के पश्चिमी जिलों– बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर, जालौर, पाली एवं नागौर में पाई जाती है। मारवाड़ी नस्ल की बकरी मध्यम आकार एवं काले रंग की होती है। इसके बाल चमकदार तथा पूंछ छोटी एवं पतली होती है। इसका अयन छोटा गोल एवं पूर्ण विकसित होता है। इनके सींग छोटे नुकीले तथा ऊपर एवं पीछे की तरफ घूमाव लिए हुए होते हैं। नर बकरे में दाढ़ी पाई जाती है। इनका सिर छोटा, जिस पर छोटे एवं चपटे कान होते हैं। वयस्क नर एवं मादा का औसत शारीरिक भार लगभग 42 तथा 32 किलो होता है। यह लगभग 200 दिन के दुग्ध उत्पादन काल में आधा से एक किलो दूध प्रतिदिन देती है। उचित रखरखाव एवं खानपान से इसका दूध उत्पादन दो–तीन किलो प्रतिदिन तक बढ़ाया जा सकता है। सामान्यतया एक बार में एक बच्चे को जन्म देती है, लेकिन दो बच्चे भी पैदा करने की क्षमता भी 15–20 प्रतिशत तक होती है जिसे उचित खानपान से बढ़ाया जा सकता है। इसे मांस, दूध तथा बालों के लिए भी पाला जाता है। प्रति वर्ष 300 ग्राम बालों का उत्पादन प्राप्त होता है जिसे रस्सी, कालीन तथा थैले बनाने के काम लिया जाता है। इसके शरीर पर बालों की मोटी परत इसे अत्यन्त ठण्डे एवं गर्म मौसम से बचा कर रखती है। इसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं सस्ते स्तर के आहार पर भी सही प्रकार से जीवनयापन इसके प्रमुख गुण है। पशुपालकों के रेवड़ों में अधिक उत्पादन एवं वृद्धि के लिए नस्ल सुधार का कार्यक्रम आई.सी.ए.आर के सहयोग से राजुवास के बीकानेर केन्द्र पर चलाया जा रहा है, जिसमें उच्च गुणवत्ता के बकरे किसानों को वितरित किये जा रहे हैं तथा अच्छे परिणाम दिखाई दे रहे हैं।

सफलता की कहानी
बकरी पालन के भी बने सुल्तान

कृषि और पशुपालन राजस्थान में किसानों की आजीविका का महत्वपूर्ण साधन है। कृषि व पशुपालन के उचित संयोजन से आर्थिक स्वावलम्बन व बेहत्तर जीवनयापन सम्भव है। जलवायु परिवर्तन व कातरा जैसे परजीवी प्रकोप की स्थिति में पशुपालन एक उत्तम विकल्प के रूप में सामने आता हैं। इसी पुरातन परम्परा को निभाते हुए इस कृषि–पशुपालन (मिश्रित खेती) संयोजन का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया है लाडनूं के दुजार गांव के प्रगतिशील पशुपालक सुलतान गुर्जर ने। सुलतान गुर्जर के पास 8 बीघा जमीन है। सात वर्ष पूर्व इन्होंने पशुपालन को आजीविका के रूप में अपनाने का निश्चय किया। दो बकरी व दो भेड़ो से पशुपालन आरम्भ करने वाले सुल्तान के पास वर्तमान में 32 बकरियां, 20 बकरे, 21 भेड़ें, 7 नर भेड़ें तथा 3 गायें हैं। इस प्रकार वर्तमान में 83 पशु हैं। प्रत्येक 6 माह में ये भेड़ों की ऊन की कतरन करते हैं व 28 से 30 रू. प्रति किलो ऊन बेचते हैं। लगभग 30 बकरे प्रति वर्ष बेचते हैं और एक लाख रू. की आय औसतन प्राप्त करते हैं। प्रति 6 माह में 40–50 मैमने पैदा होते हैं। इस प्रकार इनका व्यवसाय निरन्तर चलता रहता है। वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एव अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाडनूं की स्थापना के बाद व मेरा गांव–मेरा गौरव योजना के अन्तर्गत दुजार गांव गोद लेने के बाद से प्रशिक्षण केन्द्र के निरंतर सम्पर्क में रहकर इन्होंने बकरी पालन, पशु आहार व पशु रोग प्रबंधन आदि विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया हैं तथा नियमित रूप से पशुओं का टीकाकरण करवाते हैं तथा समय समय पर कृमिनाशी दवा पिलाते हैं। सुल्तान गुर्जर ने कई पशुपालकों को बकरी पालन हेतु प्रेरित किया है, उनकी यह सफलता सभी के लिए प्रेणादायी है

(सम्पर्क– सुल्तान गुर्जर, लाडनूं मो. 7733935670)

निदेशक की कलम से...

विनाशकारी गाजर घास की रोकथाम करें

विनाशकारी और अनुपयोगी गाजर घास खेत–खलिहान, पार्क, कॉलोनी में बरसाती मौसम में तेजी से फैलकर सभी प्रकार की वनस्पति और फसलों के लिए एक खतरनाक पौधा है। यह हम सब के लिए चिंता की बात है। भारत में यह खरपतवार फसलीय और गैर–फसलीय भूमि में, शहरों में, सड़कों और रेल्वे लाईनों के किनारों पर एवं संस्थानों के परिसरों की भूमि पर गंभीर रूप से फैल गई है जिस कारण उन स्थानों की उपयोगिता और सौन्दर्य खराब हो रहा है। इसके दुष्प्रभावों का असर समस्त वनस्पति जगत और पशुओं पर भी पड़ता है, अतः समय रहते इसका नियत्रंण और उन्मूलन बहुत जरूरी है। गाजर घास के लगातार संपर्क में आने वाले लोगों में कई प्रकार की व्याधियां हो सकती हैं। पशुओं के लिए भी यह अत्यधिक विषाक्त होती है। इसको खाने से पशुओं में अनेक प्रकार के रोग पैदा हो जाते हैं और दुधारू पशुओं के दूध में कड़वाहट के साथ दूध उत्पादन में कमी आने लगती है। इस घास के लगातार संपर्क में आने से मनुष्यों में डरमेटाइटिस, एलर्जी, बुखार व दमा आदि जैसी बीमारियां हो जाती हैं। गाजर घास एक वर्षीय शाकीय पौधा है। इसका हानिकारक पौधा तेजी से फैलता है क्योंकि प्रत्येक पौधे से 10 से 25 हजार तक अत्यंत सूक्ष्म बीज पैदा होते हैं। ये बीज नमी पाकर तुरन्त ही अंकुरित हो जाते हैं। एक शोध से ज्ञात हुआ है कि एक वर्ग मीटर भूमि में यह पौधा 1 लाख 54 हजार बीज उत्पन्न कर सकता है जो हल्के और पंखदार होते हैं। गाजर घास के तेजी से फैलने के कारण अन्य उपयोगी वनस्पतियां खत्म होने लगती है। जैवविविधता के लिए गाजर घास एक बहुत बड़ा खतरा बनती जा रही है। इसके कारण फसलों की उत्पादकता बहुत कम हो जाती है। फूल आने से पूर्व ही इसे उखाड़कर जला देने से काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र द्वारा कृषकों और पशुपालकों को सप्ताह भर के कार्यक्रम चलाकर जागरूक किया गया है। **प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, प्रसार शिक्षा निदेशक (मो. 9414283388)**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **सितम्बर, 2016** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**डॉ. अमित कुमार चौधरी** **8890014087** पशु प्रसूति एवं मादा रोग विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	गर्भस्थ पशु की देखभाल एवं प्रसव सम्बन्धी ध्यान में रखने वाली सावधानियां	01.09.2016
2	**डॉ. एच.के. नरूला** **9414968748** केन्द्रीय भेड़ व ऊन अनुसंधान संस्थान, बीकानेर	अधिक आय के लिए वैज्ञानिक तरीके से भेड़ पालन	08.09.2016
3	**डॉ. अशोक कुमार** **9413870171** पशु प्रसूति एवं मादा रोग विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	पशुओं में बांझपन का कारण एवं उनका निवारण	15.09.2016
4	**डॉ. आर. के. तंवर** **9414136821** वेटरनरी मेडिसन विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	पशुओं का समय पर करें बीमारियों से बचाव	22.09.2016
5	**डॉ. पंकज कुमार** **9468671068** माईक्रोबायोलोजी विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	थनैला रोग कारण व बचाव	29.09.2016

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख / विचार लेखकों के अपने है।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया